प्रोजेक्ट चीता का एक वर्ष

जैवप्रिलिम्स के लिये:

भारत में चीतों की पुनःवापसी योजना, कुनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान (KNP), CITES

मेंस के लिये:

भारत में चीते के स्थानान्तरण से जुड़ी चुनौतियाँ, जैव-विविधता का महत्त्व, आनुवंशिक, प्रजातियाँ, पारिस्थितिकी तंत्र।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

प्रोजेक्ट चीता, भारतीय वनों में **अफ्रीकी चीतों की पुनःवापसी** का भारत का एक महत्त्वाकांक्षी प्रयास है जो कि **सितंबर 2022 में आरंभ** किया गया था, **एक वर्ष पूर्ण** कर चुका है।

- परियोजना के अंतर्गत चार मामलों में अल्पकालिक सफलता हासिल करने का दावा किया है: जिसमें **"दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया** से लाए गए चीतों में से **50% जीवित रहना**, **होम रेंजों की स्थापना**, **कुनो में शावकों का जन्म"** एवं स्थानीय समुदायों के लिये राजस्व सृजन।

प्रोजेक्ट चीता के प्रथम वर्ष के व्यापक परिणाम:

- **वनों में इनका अस्तित्व:**
  - चीता पुनः वापसी परियोजना के अनुसार, चीते, जो जंगल में कुल 142 महीनों के लिये लाये गए थे, ने संयुक्त रूप से 27 महीने से भी कम समय बिताया।
  - धात्री, साशा, सूरज, उदय, दक्ष और तेजस उन छह चीतों में से थे, जो कार्यात्मक वयस्क आबादी में परियोजना की 40% की गिरावट के परिणामस्वरूप मारे गए थे।
    - इसके अतिरिक्त, भारत में चार शावकों का जन्म हुआ जिनमें से तीन की मृत्यु हो गई और चौथे को कैद करके पाला जा रहा है।
- **होम रेंज की स्थापना:**
  - इसका लक्ष्य चीतों के लिये कूनो में घरेलू क्षेत्र स्थापित करना था।
    - नामीबिया से आयातित केवल तीन चीते- आशा, गौरव और शौर्य - जंगल में तीन महीने से अधिक समय तक जीवित रहने में सक्षम थे। लेकिन जुलाई 2023 के बाद वे बोमा या बाड़ों तक ही सीमित रहे।
  - जिस कारण कूनो नेशनल पार्क में "होम रेंज" की सफल स्थापना के बारे में संदेह है।
- **प्रजनन सफलता:**
  - कार्य योजना का उद्देश्य जंगल में चीतों का सफल प्रजनन कराना है।
    - **नामीबियाई मादा सियाया उर्फ ज्वाला** ने कूनो में चार शावकों को जन्म दिया। हालाँकि उसे बंदी बनाकर पाला गया तथा जंगल के लिये अयोग्य माना गया। उसके शावक एक बोमा (इसमें वी आकार की बाड़ के माध्यम से जानवरों का पीछा करके उन्हें एक बाड़े में कैद किया जाता है) में ही जन्मे थे।
  - प्रजनन लक्ष्य को चुनौतियों तथा समझौतों का सामना करना पड़ता है, जिससे परियोजना की दीर्घकालिक सफलता पर प्रश्नचिह्न लगते हैं।
- **स्थानीय आजीविका में योगदान:**
  - कुनो क्षेत्र में अनुबंधों, नौकरियों का निर्माण तथा भूमि मूल्यों में वृद्धि, ये सभी **प्रोजेक्ट चीता के लाभकारी** प्रभाव थे।
    - क्षेत्र में **मानव-चीता संघर्ष की कोई सूचना नहीं** है, जो कि यहाँ आए चीतों और स्थानीय समुदायों के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व समन्वय का संकेत देता है।

प्रोजेक्ट चीता को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

- **सत्यनिष्ठा चुनौतियाँ:**
    - तीन नामीबियाई चीते, साशा (परियोजना की पहली दुर्घटना से ग्रस्त), ज्वाला, और सवाना उर्फ नाभा को परियोजना की अखंडता से समझौता करते हुये "**अनुसंधान विषयों**" के रूप में बंदी बनाकर रखा गया था।
- **दृष्टिकोण में बदलाव:**
    - चीतों को आयात करने के कुछ सप्ताह बाद भारत ने परियोजना की प्रतिज्ञाओं पर नैतिक सवाल उठाए जब उसने हाथीदाँत के व्यापार पर प्रतिबंध लगाने वाले **[वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) में वोट से दूर रहने का फैसला किया।](#)**
- **अग्रिम प्रतिमान में बदलाव:**
    - **आनुवंशिक रूप से** चीतों की **आत्मनिर्भर जनसंख्या** का समर्थन करने में कुनो की असमर्थता के कारण **वृहद-जनसंख्या दृष्टिकोण** के लिये एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता होती है।
        - वृहद -जनसंख्या दृष्टिकोण में खंडित आवासों में एक प्रजाति की अलग-अलग आबादी का प्रबंधन करना, दीर्घकालिक व्यवहार्यता और आनुवंशिक विविधता के लिये उनकी परस्पर निर्भरता को स्वीकार करना शामिल है।
    - तेंदुओं के विपरीत, **चीते** अपनी विरल जनसंख्या के कारण अकेले **लंबी दूरी तय नहीं कर सकते हैं।**
    - आनुवंशिक व्यवहार्यता के लिये आवधिक स्थानांतरण के दक्षिण अफ्रीकी मॉडल को अनुकूलित करने का सुझाव दिया गया है, लेकिन प्राकृतिक वन्यजीव फैलाव के कारण वन कनेक्टिविटी पर प्रभाव के बारे में चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।
- **कुनो की वहन क्षमता:**
    - चीता एक्शन प्लान में **50 से अधिक एकल जीवों** की संख्या के साथ दीर्घकालिक अस्तित्व की उच्च संभावना का अनुमान लगाया गया है।
        - वर्ष 2010 में एक व्यवहार्यता रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया था कि कुनो के 347 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में अधिकतम 27 चीतों को रखा जा सकता है, जबकि 3,000 वर्ग किमी. के बड़े परिदृश्य में 70-100 चीतों को रखा जा सकता है।
        - वर्ष 2020 में संशोधित आकलन से संकेत मिलता है कि कुनो में चीतल(मृगों) का घनत्व 38 प्रति वर्ग किमी. है, जो 21 चीतों का निवास स्थल है और 50 चीतों की एकल संख्या की व्यवहार्यता के लिये चुनौतीपूर्ण है।
    - परियोजना का एकमात्र विकल्प अब **मध्य और पश्चिमी भारत में वितरित हुई मेटा-जनसंख्या** है, जो सहायता प्राप्त वितरण के दक्षिण अफ्रीकी मॉडल की तुलना में अधिक चुनौतियाँ पेश कर रही है।

चीता पुनः वापसी परियोजना क्या है?

- भारत में चीता पुनः वापसी परियोजना औपचारिक रूप से 17 सितंबर, 2022 को प्रारंभ हुई, जिसका उद्देश्य देश में **चीतों की आबादी** को बहाल करना था, जिन्हें **वर्ष 1952 में देश में विलुप्त घोषित** कर दिया गया था।
- इस परियोजना में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से **मध्य प्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान** में चीतों का स्थानांतरण शामिल है।
- यह परियोजना [राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)](#) द्वारा **मध्य प्रदेश वन विभाग**, [भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII)](#) तथा नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका के चीता विशेषज्ञों के सहयोग से कार्यान्वित की गई है।

[//](#)

चीता (Cheetah)

सामान्य नाम: **एशियाई चीता**

वैज्ञानिक नाम: ***एसिनोनिक्स जुबेटस (Acinonyx jubatus)***

- *एसिनोनिक्स जुबेटस जुबेटस* (एशियाई चीता)
- *एसिनोनिक्स जुबेटस वेनाटिकस* (अफ्रीकी चीता)

विशेषताएँ:

- विश्व का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनधारी
- चीते अपनी क्षमता के बजाय गति के लिये जाने जाते हैं; जब ये अपने शिकार का पीछा करते हैं तो यह केवल **200-300** मीटर के लिये तथा **1** मिनट से कम अवधि का होता है।
- शेर, लकड़बग्घे और तेंदुए जैसे अन्य शक्तिशाली शिकारियों से प्रतिस्पर्द्धा से बचने के लिये चीते मुख्य रूप से दिन के दौरान शिकार करते हैं।

अफ्रीकी चीता बनाम एशियाई चीता:

- **अफ्रीकी:** हल्के भूरे और सुनहरे रंग की **त्वचा; एशियाई चीते से मोटी**
  - ***चेहरों पर धब्बों तथा रेखाओं की प्रधानता***
  - *पूरे अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं*
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति:* सुभेद्य (Vulnerable)**
- **एशियाई:** अफ्रीकी चीतों से थोड़े छोटे
  - ***हल्के पीले रंग की त्वचा: शरीर के नीचे विशेष रूप से पेट पर अधिक बाल***
  - ***केवल ईरान में पाए जाते हैं;*** *देश द्वारा यह दावा किया जाता है कि अब यहाँ केवल **12** चीते शेष हैं।*
- **वर्ष 1952:** एशियाई चीता को **आधिकारिक रूप से भारत से विलुप्त** घोषित किया गया
  - ***IUCN रेडलिस्ट में स्थिति:* घोर संकटग्रस्त (Critically Endangered)**

एशियाई चीता

अफ्रीकी चीता

भारत में चीतों का पुनर्वास:

- **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की 19वीं बैठक में MoEF-CC** द्वारा **"भारत में चीता पुनर्वास के लिये कार्ययोजना"** जारी की गई थी। (जनवरी **2022**)
  - *इसी तरह की एक कार्ययोजना सर्वप्रथम वर्ष **2009** में प्रस्तावित की गई थी।*
- सितंबर **2022** में **नामीबिया से आठ चीतों को भारत में पुनर्वास हेतु लाया गया।**
  - *इन आठ चीतों को **मध्यप्रदेश के कुनो-पालपुर राष्ट्रीय उद्यान** में स्थानांतरित किया जाएगा।*
- नामीबिया से भारत में चीतों का स्थानांतरण **विश्व भर में किसी बड़े मांसाहारी जानवर की पहली स्थानांतरण परियोजना है।**

नोट:

- **थल के सबसे तेज़ जंतु** चीता को **"क्रपिसकुलर" शकिारी** माना जाता है, जसिका अर्थ है कि वे सूर्योदय और सूर्यास्त के समय शकिार करते हैं।
- मादा चीता की **गर्भधारण अवधि 92-95 दनिों की होती है** तथा ये लगभग 3- 5 शावकों को जन्म देती हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????????:

नम्िनलखिति पर वचिार कीजयि: (2012)

1. काली गर्दन वाला सारस (कृष्णाग्रीव सारस)
2. चीता
3. उड़न गलिहरी (कंदली)
4. हमि तेंदुआ

उपर्युक्त में से कौन-से भारत में प्राकृतकि रूप से पाए जाते हैं?

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/one-year-of-project-cheetah